SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# यमुनातीरे

## अंक : ग्यारह

### हिन्दी वार्षिक पत्रिका (वर्ष 2023)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली-110054

# हिंदी दिवस, 2022 एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# यमुनातीरे

अंक : ग्यारह

## हिन्दी वार्षिक पत्रिका

(वर्ष 2023)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली-110054

अंक: ग्यारह
वर्ष: 2023

# कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
# (वित्त एवं संचार), दिल्ली
# वार्षिक हिन्दी पत्रिका

**संरक्षक :**

**श्रीमती रोली शुक्ला माल्गे**
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

**प्रकाशन परामर्शदातृ मण्डल :**

**मोहम्मद परवेज आलम**
निदेशक (मुख्यालय)

**श्रीमती प्रीति रमेशचंद जैन**
उपनिदेशक (प्रतिवेदन)

**सम्पादक मण्डल :**

**श्री डी के सिंह**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

**श्रीमती गीता मेहता**
(हिन्दी अधिकारी)

**डॉ. शिप्रा पांडे**
(हिंदी अधिकारी)

**सह-संपादक :**

**सुश्री दीपा शर्मा**
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

**श्री रमेश कुमार**
लेखापरीक्षक

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएँ हैं। कार्यालय या संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

# अनुक्रमणिका


| | पृ.सं. |
|---|---|
| अनुक्रमणिका | 3 |
| संदेश (अमित शाह गृह मंत्री) | 4 |
| संदेश (श्रीमती रोली शुक्ला माल्गे) | 6 |
| संदेश (मोहम्मद परवेज आलम) | 7 |
| सम्पादकीय (श्री डी के सिंह) | 8 |
| आपके पत्र | 9 |

| | | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 1. | पर्वत की व्यथा<br>*पंकज कुमार मौर्य* | 11 |
| 2. | छोटी सी कहानी जो जिंदगी बदल देगी<br>*रमेश कुमार* | 13 |
| 3. | एक कदम सकारात्मकता की ओर<br>*गीता रानी* | 15 |
| 4. | फौजी<br>*नवीन कुमार* | 17 |
| 5. | एक कदम परोपकार की ओर<br>*नन्दिनी दत्ता राय* | 18 |
| 6. | इंतजार बाकी है<br>*राजेश कुमार जांगिड* | 19 |
| 7. | बेरोजगारी अवसर या अभिशाप<br>*नवीन कुमार मोरल* | 20 |
| 8. | शिक्षक<br>*नवीन कुमार* | 22 |
| 9. | चुटकुले<br>*रमेश कुमार* | 24 |
| 10. | श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा<br>*सुरेश कुमार हेला* | 26 |
| 11. | आज का युवा<br>*गीता मेहता* | 28 |
| 12. | समभाव<br>*पंकज मोहन जायसवाल* | 29 |
| 13. | शहीद<br>*भाव्या सक्सेना* | 30 |
| 14. | नारी सृजन का आधार<br>*सीमा कुमारी* | 31 |
| 15. | सुबह की सैर (व्यंग्य)<br>*प्रदीप कुमार चौधरी* | 33 |
| 16. | कार्यालय मे आयोजित रक्त दान शिविर | 34 |
| 17. | हिंदी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह | 35 |
| 18. | कार्यालय द्वारा आयोजित नॉर्थ जोन क्रिकेट टूर्नामेंट | 40 |

सत्यमेव जयते

**अमित शाह**
**गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**

प्रिय देशवासियों

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं. ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी

सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13, 14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस 2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली कंठस्थ का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जनसाधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत शब्दकोश के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं. यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्दसंपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियों हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्‌बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

# संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के नूतन अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई। हिंदी आज विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान बना रही है। हिंदी भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं है, अपितु हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब भी है। संस्कृति के संरक्षण व देश को एक सूत्र में पिरोये रखने में हिंदी का अहम योगदान रहा है। राजभाषा हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य तो है ही साथ ही यह हमारा दायित्व भी है।

राजभाषा विभाग की ओर से केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाते हैं। 'यमुनातीरे' का प्रकाशन इसी कड़ी का एक हिस्सा है, जिसमें साहित्यिक विचारों का समागम है। हमारे देश में विविध समुदायों, संस्कृतियों को हिंदी ने परस्पर जोड़ा है और उनकी कला, इतिहास और साहित्य को प्रभावित किया है। हिंदी अगर भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है तो पत्रिका 'यमुनातीरे' इस संस्कृति को और अधिक परिपुष्ट करने का माध्यम बनेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं 'यमुनातीरे' के ग्यारहवें अंक के प्रकाशन पर सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

**श्रीमती रोली शुक्ला माल्गे**

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

# संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के ग्यारहवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। भारत वर्ष एक विशाल प्रजातांत्रिक राष्ट्र है। भारत के नागरिक तथा सरकारी सेवक होने के नाते कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है।

हमारे कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु समर्पित है तथा हमारा कार्यालय राजभाषा नीतियों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों ने अपने हृदय के अविरल भावों को कागज पर उतारकर नवीनतम एवं श्रेष्ठ रचनाओं को हम तक पहुंचाया है। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी हिंदी प्रेमियों और पत्रिका परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

**मोहम्मद परवेज आलम**

निदेशक (मुख्यालय)

# सम्पादकीय

प्रिय पाठक वृन्द,

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में विभागीय हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' की विशेष भूमिका रही है। भाषा केवल शिक्षा का माध्यम नहीं अपितु संस्कृति का वाहक भी होती है। हमारी इस पत्रिका के कुछ रचनाकारों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है परन्तु उन्होंने अपनी ओर से इस पत्रिका के प्रकाशन में सहर्ष योगदान दिया है। भिन्न–भिन्न प्रकार की रचनाओं से ओत–प्रोत यह पत्रिका अधिकारियों/कर्मचारियों के उत्कृष्ट लेखन–कला का प्रमाण है।

राष्ट्रहित के लिये भारतीय संस्कृति के विकास एवं सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हमें राजभाषा हिन्दी का प्रयोग वार्तालाप, पत्राचार एवं प्रत्येक क्षेत्र में अधिक से अधिक करना है। पत्रिका को त्रुटिरहित बनाने का प्रयास किया गया है। सभी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के सन्दर्भ में, वे अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करायें।

**श्री डी के सिंह**

(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

राजभाषा

# आपके पत्र

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "युमनातीरे" के दशम अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मिलित साम्रगी उच्च स्तर की है। श्री हरीराम जौनपुरी की कविता "माँ की महिमा", श्रीमती गीता रानी का लेख " फूलदेई– एक त्यौहार", श्रीमती नन्दनी दत्ता राय की कविता "माली और उसकी बगिया" एवं श्रीमती गीता मेहता का संकलन "हिंदी के संबंध में कुछ महापुरुषों के विचार" आदि पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। सभी लेख पठनीय एवं प्रशसनीय है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

**कार्यालय प्रधान निदेशक**
**वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन**
**सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय,**
**बैंगलोर**

'यमुनातीरे' पत्रिका के दशम अंक की सभी रचनाएं ज्ञानप्रद, मनोरंजक और रुचिकर हैं। पत्रिका की रचनाएं जीवन के विभिन्न स्वरुपों का आकर्षक और विचारपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करती हैं पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के रचनाकारों और सफल संपादन हेतु संपादक हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति हेतु इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएँ।

**वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय**
**मुम्बई**

आपके कार्यालय की पत्रिका "युमनातीरे" के 10 वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज–सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक हैं। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है पर विशेष रुप से सुश्री गीता रानी की "बेटी दिवस" एव श्री हरीराम जौनपुरी की "शिक्षा का संदेश" बेहद प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है।

कविताओं में श्री मुकेश कुमार सक्सेना की "मेरा देश" एवं सुश्री नंदिनी दत्ता रॉय की "माली और उसकी बगिया"काफी अर्थपूर्ण एवं रोचक हैं।

पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),**
**पश्चिम बंगाल**

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के दशम अंक की प्रति मिली, एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में स्तरीय और ज्ञानवर्धक रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ 'पृथ्वी का संरक्षण' पर केंद्रित है। इस संबंध में 'धरा नहीं होगी तो सब धरा रह जायेगा' संदेश के माध्यम से जागरुकता का प्रसार किया गया है।

इस अंक में सम्मिलित 'फूलदेईः एक त्यौहार, बेटी दिवस, 'ऑर्गेनिक फूड़' शीर्षक रचनाएँ विशेष रुप से उल्लेखनीय एवं पठनीय हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और कर्मिकों की

सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने में 'यमुनातीरे' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसका भविष्य और उज्ज्वल हो, इसी कामना के साथ समस्त सम्पादकीय मण्डल और रचनाकारों को पुनः बधाई और शुभकामनाएँ।

**कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),**
**बिहार, पटना**

इस संदर्भ में लेख है कि आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के दशम अंक की एक प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। 'हिंदी' पत्रिका "युमनातीरे" के दशम अंक की सभी रचनायें, लेख, कविता, कहानियां इत्यादि इस कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों को अत्यंत पसंद है।

"युमनातीरे" के दशम अंक के लेख में श्रीमती गीता रानी द्वारा लिखित कहानी "बेटी दिवस", श्री हरीराम जौनपुरी द्वारा लिखित कविता "राष्ट्रहित", श्री पंकज मोहन जायसवाल द्वारा लिखित कविता "गांधी के सपनों का भारत", श्री धर्मपाल सिहं द्वारा लिखित कहानी "एक पिता का दर्द", श्रीमती नंदनी दत्ता राय द्वारा लिखित कविता "माली और उसकी बगिया" एवं श्री शमीम अहमद द्वारा लिखित कविता "एक मोल" बहुत अच्छी एवं पठनीय है।

पत्रिका अपने कार्य को बखूबी निभा रही है, इसके आने का इंतजार इस कार्यालय को हमेशा रहता है, प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बहुत–बहुत शुभकामनायें।

**वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय,**
**कपूरथला**

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज–सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रुप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री हरीराम जौनपुरी की कविता "राष्ट्रहित", श्री पंकज मोहन जायसवाल की कविता "गांधी के सपनों का भारत" एवं श्री राजेश कुमार जांगिड़ की कविता "प्रभाव" काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.),**
**बिहार, पटना**

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में हिंदी पत्रिका "युमनातीरे" के दशम् अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज–सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री हरिराम जौनपुरी की कविता "माँ की महिमा" एवं श्री धर्मपाल सिहं, लिपिक की कहानी "एक पिता का दर्द" अत्यंत प्रशसंनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रुप से पठनीय है। श्रेष्ट सम्पादन के लिये पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अवरिल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं।

**कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा**
**(गृह,शिक्षा एवं कौशल विकास),**
**नई दिल्ली**

आपकी राजभाषा पत्रिका "युमनातीरे" के दशम् अंक (जनवरी–2020) साभार प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषित करने हेतु धन्यवाद। उक्त पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज–सज्जा अतीव आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय एवं बेमिसाल है। इनमें से "मेरा देश", "राष्ट्रहित", "चुनाव", "शिक्षा का संदेश", "बड़ा महत्व है" और "बदलती प्रकृति", अति उत्तम एवं शिक्षाप्रद है।

ऐसे पठनीय अंक के लिये सम्पादक मंडल को बधाई एवं भविष्य के लिये शुभकामनाएं।

**कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),**
**उत्तराखण्ड, देहरादून**

# पर्वत की व्यथा

**पंकज कुमार मौर्य**
उपनिदेशक (एएमजी-।।)

पर्वत ने मौनव्रत तोड़ा,
और पर्वत बोला मानव से, हे मानव!

मैंने तुझे जीवन की तमाम नेमतों से नवाज़ा,
और तू नादान उन भेंटो को नैसर्गिक रूप में भी न रख पाया।

मैंने तुझे अरण्यों की प्राणवायु का तोहफा दिया,
और तूने औद्योगिकीकरण के नशे के धुएं से उसे प्राणघातक बना दिया।

मैंने तुझे हिमाच्छादित शिखरों से कल–कल जलधाराओं का खजाना दिया,
और तूने उस जीवनदायक अमृत के प्रवाह को अपनी मूर्खता
के मिश्रण से जहरीला बना दिया।

मैंने तुझे अपनी काया ढकने हेतु आशियाने का तिनका दिया,
और तूने उसके बदले में मेरी काया का तिनका–तिनका छीन लिया।
पर्वत बोला मानव से, हे मानव!

मैंने अपनी ऊँचाई से तेरी फसलों हेतु इंद्र देवता का आहवान किया,
और तूने अनवरत खनन से हरी–भरी वादियों को रेगिस्तान में तब्दील किया।

मैने तुझे औषधियाँ व जड़ी–बूटी देकर तेरे घाव भरे,
और तूने बारूद के विस्फोट से बार–बार घाव किये हरे।

मैंने तुझे धूप की लपट से बचाया,
और तूने मुझे दावानल की लपट में जलाया।

मैंने तेरे दुर्गों को अपनी ऊँचाई से स्थिरता दी,
और तूने बड़े– बड़े बाँध बनाकर भूकंप की अस्थिरता दी।

पर्वत बोला मानव से, हे मानव!
मैंने अपनी गोदी में गाँव बसाकर तेरे कुनबों को जोड़ा,
और तूने मुझे विकास की अंधाधुंध दौड़ में जगह–जगह से तोड़ा।

तेरे बच्चे मेरे वृक्षों की टहनियों पर झूले,
और मेरे बच्चे (जंगली जानवर) तेरी ख्वाहिशों की भेंट चढ़े।

मैंने तुझे जलवायु परिवर्तन से बचाने हेतु भरसक प्रयास किया,
और तूने अपनी संकुचित स्वार्थ सिद्धि हेतु उन पर पानी फेर दिया।

मैंने तेरे दीर्घायु होने के सपने बुने,
और तूने अपनी कब्र खोदने के व्यापक बंदोबस्त किए।

पर्वत रुदन–क्रंदन करते हुए बोला,
अगर अब भी तू न जागेगा, तो अपनी संतानों के लिए क्या छोड़ कर जाएगा।

पर्वत गंभीरता से बोला हे मूर्ख मानव!
ये समझ विकास पर्यावरण के साथ संतुलन है, न कि पर्यावरण का हरण है।

पर्वत खीज कर बोला,
अगर तू अब भी न रुकेगा, तो क्या सतत विकास का सपना साकार कर पाएगा।
पर्वत अब मार्गदर्शन करता है, हे मानव!

अपनी अज्ञानता की तंद्रा से जाग ले,
अपनी करनी का पश्चाताप भविष्य के सकारात्मक पहलों से कर ले।

पर्वत अब मौन है।
पर क्या मानव उसकी रुदन–क्रंदन, गंभीरता, खोज व
मार्गदर्शन के प्रति चिंतित व संवेदनशील है।

# छोटी सी कहानी जो जिंदगी बदल देगी

**रमेश कुमार**
लेखापरीक्षक (केन्द्रीय कार्यालय)

यह एक छोटी सी कहानी ऐसे व्यक्ति की है जो एक बहुत अच्छी कम्पनी में जॉब करता था। कम्पनी बहुत बड़ी थी और व्यक्ति भी अच्छे पद पर काम करता था। वह काम के दबाव के कारण बहुत ही तनाव में रहता था। घर आता था और सारा गुस्सा बच्चों और पत्नी पर निकाल देता था। व्यक्ति के इस स्वभाव से बच्चे और पत्नी बहुत परेशान रहते थे कि आखिर इसे हुआ क्या है। दिन भर इस व्यक्ति को लगता कि इसका होना न होना बराबर है। जब रिश्तेदारों का फोन आता तब उनसे सही ढ़ंग से बात नहीं करता। व्यक्ति अपने जीवन से परेशान हो गया था, कोई चाहत, खुशी नहीं रहती थी। उसे लगता कि घर का सारा खर्चा उठाना, घर और बाकी सामानों का लोन चुकाना इसे ही पड़ता है।

आज के जीवन शैली से वह परेशान हो चुका था। एक दिन इसका बच्चा इसके पास आया और कहा कि पापा आप मेरी होमवर्क करवाने में मदद कर दीजिए तो इसने सारा गुस्सा बच्चे पर निकाल दिया और कहा कि जाओ अपना काम खुद करो। बच्चा रुआंसा होकर चला गया। थोड़ी देर बाद जब इसका गुस्सा शांत हुआ तब इसे लगा कि क्या हमेशा बच्चों को डांटना  उसकी मदद कर देनी चाहिए। यह सोचता हुआ वह बच्चे के कमरे में जाता है तो देखता है कि बच्चा सो चुका और होमवर्क की कॉपी बच्चे के टेबल पर पड़ी थी उसने सोचा कि कॉपी को सही से रख देना चाहिए, उसने कॉपी उठाई फिर सोचा कि देख लेता हूँ कि आखिर इसे किस चीज में मेरी मदद चाहिए थी। होमवर्क पढ़ने लगा तो उसका

शीर्षक था कि वो चीजें जो हमें शुरु में अच्छी नहीं लगती लेकिन बाद में अच्छी लगने लगती हैं। इस शीर्षक पर बच्चे को एक निबंध लिखना था। बच्चे ने एक पैराग्राफ लिख दिया था व्यक्ति उसे पढ़ने लगा। बच्चे ने लिखा था मैं फाइनल परीक्षा को थैंक्यू कहना चाहता हूँ जो शुरु में तो अच्छी नहीं लगती हैं क्योंकि बहुत पढ़ाई करनी पड़ती है लेकिन उनकी वजह से गर्मी की छुट्टियां आ जाती है।

मैं थैंक्यू कहना चाहता हूँ उन कड़वी लगने वाली दवाइयों को जो स्वाद में तो कड़वी लगती हैं लेकिन उनकी वजह से हम ठीक हो जाते हैं।

फिर बच्चे ने लिखा कि मैं थैंक्यू कहना चाहता हूँ उन अलार्म क्लाक जो हमें सुबह–सुबह उठा देती है हमें अच्छा नहीं लगता लेकिन हमें मालूम चलता है कि हम जिंदा है

मैं थैंक्यू कहना चाहता हूँ ऊपर वाले को जिसने मुझे पापा दिया, वही पापा जो शुरु में मुझे डांटते है मुझे अच्छे नहीं लगते लेकिन बाद में मुझे बाजार लेकर जाते है, घूमाते है, गिफ्ट खरीदते हैं। मैं थैंक्यू कहना चाहता हूँ ऊपर वाले का उसने मुझे पापा दिया क्योंकि मेरे दोस्त के तो पापा ही नहीं है।

यह जो आखिरी लाइन थी उसने बंदे को हिला दिया, अंदर तक झकझोर दिया, वह नींद से जाग गया इसे लगा कि इसके जीवन का मकसद क्या है। बच्चे ने जो लिखा था उसे कॉपी करने लगा कि हे ऊपर वाले, तेरा थैंक्यू कि मेरे पास घर है क्योंकि कई लोगों के पास तो घर भी नहीं, थैंक्यू कि मेरे पास पत्नी, बच्चें और परिवार है क्योंकि कई लोगों के पास तो परिवार भी नहीं। हे ऊपर वाले, तेरा थैंक्यू कि मेरे पास ऑफिस है, वर्क है वर्क प्रेशर है कई लोगों के पास तो नौकरी हीं नही है। हे ऊपर वाले, तेरा थैंक्यू कि मेरे पास वह सारी चीजें है कईयों के पास तो कुछ भी नहीं। हे ऊपर वाले, तेरा थैंक्यू जो आपने मुझे जिन्दगी दी है, रिश्तेदार दिये हैं, दोस्त दिए कई लोगों के पास तो वह भी नहीं है। इस बन्दे को उस दिन अपनी जिन्दगी का मतलब समझ आ गया।

यह छोटी सी कहानी बहुत बड़ी सीख देती है। यह मंत्र देती है कि जिन्दगी में जो मिला है उसमें खुश रहिए और खुशी–खुशी अपनी जिन्दगी के दायरे को बड़ा करने की कोशिश कीजिए।

किसी ने बड़ी कमाल की बात कही है कि जिंदगी को शांति से जीने के दो ही तरीके है–
पहला उन्हें माफ कर दो जिन्हें आप भूल नहीं सकते और दूसरा भूल
जाओ उन्हें जिन्हें आप माफ नहीं कर सकते।

# एक कदम सकारात्मकता की ओर

**गीता रानी**
निजी सचिव (केन्द्रीय कार्यालय)

सकारात्मक ऊर्जा को अंदर आने देने के लिये नकारात्मक भावनाओं को छोड़ना महत्वपूर्ण है। आप अपने साथ जो रिश्ता साझा करते हैं वह महत्वपूर्ण है। अपने कल्याण में निवेश करना दर्शाता है कि आप खुद का सम्मान करते हैं और प्यार करते हैं। जीवन शैली में परिवर्तन परिवर्तनकारी है उसे किसी भी अन्य रिश्ते की तरह समय, प्यार और प्रतिबद्धता की जरुरत होती है। सकारात्मकता के कई लाभ हैं– दीर्घायु और जीवन शक्ति से लेकर प्रतिरक्षा तक।

जब आप सोच समझ कर चुनाव करना शुरु करते हैं तो आपको कोई रोक नहीं सकता है। सकारात्मक ऊर्जा को उत्पन्न करके आप अपनी आवश्यकताओं, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होते हैं जो आपके जीवन में खुशहाली और प्रेरणादायी होता है। हमें सकारात्मकता लाने के लिये कुछ प्रयास करने पड़ते हैं जिससे हम सकारात्मकता की ओर अग्रसर हो सकें।

1. ऊर्जा का संग्रहणः पौष्टिक आहार, उचित जलयोजन और व्यायाम के माध्यम से उत्पन्न होने वाली स्वस्थ ऊर्जा को संग्रहीत करें। सांस को अंदर ले जाते एवं छोड़ते समय पेट रीढ़ की ओर जाता है तभी आपकी स्वस्थ ऊर्जा शरीर के संतुलन को बहाल करती है और आपकी खुशी वाले हार्मोन का निर्माण होता है।

2. ध्यानः शुरुआत में ध्यान में स्थिरता नहीं आ पाती है इसके लिये शर्मायें नहीं। ध्यान धीमी गति में बहने वाली गतिविधियों और गहरी लयबद्ध सांसो का एक संयोजन है। यह न केवल आपके सद् विचारों को प्रवाहित करने में मदद करता है बल्कि आपकी भावनाओं को भी किसी नकारात्मकता की ओर बढ़ने से रोकता है ध्यान से आपके आंतरिक अंगो को सबल मिलता है और आपकी प्रतिरक्षा का निर्माण भी होता है। श्वास इस आनंदमय अभ्यास का अभिन्न अंग है।

3. अवकाशः रोजमर्रा की जिंदगी से थोड़ा अवकाश जरुरी है। यह आपकी ऊर्जा को पुर्नजीवित करने में आपकी सहायता करता है। घूमने–फिरने से दिमाग भी रोज की जिंदगी से हटकर तरोताजा का अनुभव करता है। ज्यादा कुछ नहीं, पार्क में जाकर बच्चों के साथ खेला जाये या उनको खेलता देख कर आनन्द का अहसास किया जा सकता है।

4. तत्पश्चात एक अच्छी सी नींद ली जाये। यह आपके भीतर एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा।

5. डायरी लेखनः आप जो सोचते है उसको अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है। आपको अपने विचार व्यक्त करने के लिये एक लेखक होना जरुरी नहीं है। स्वाभाविक रुप से जो भी विचार आते हैं उनको लिखने या चित्रित करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। आपकी सोच को एक रुप मिलता है जो हमारे आत्म प्रेम को बढ़ाता है। आपका दिमाग जो आपको संदेश देता है और आपका दिल उसे कैसे क्या व्यक्त करना चाहता है, इसे लिखा जा सकता है।।

6. खोजः आप जो करते हैं उससे हटकर कुछ नया खोजें। ऑनलाइन कक्षा द्वारा कसरत करें, नया संगीत सीखें, डांस सीखें, अपने अंदर के बच्चे के संपर्क में रहें। आप

जो करना चाहते है उसको जरुर करें। अपने अंदर की आवाज सुने, नये पहलुओं की खोज करें।

7. उत्प्रेरक सारणी बनायें: आप उन चीजों की सूची बनाए जो आपको नकारात्मक ऊर्जा के विस्थापन की ओर प्रेरित करती है। यह सूची आपको अपने काम या रिश्तों पर प्रतिक्रिया करने और समझौता करने से पहले रुकने और सही दिशा दिखाने में सहायक होगी। आप एक सूची और बनायें जो आपको सकारात्मकता की ओर प्रोत्साहित करती हो। यह नकारात्मकता को नकारने में मदद करेगी और आपको सकारात्मकता की ओर सशक्त करेगी।

8. धूप व सुगंध: धूप की हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। अगर आप धूप में नहीं रहते हैं या वह आपको दिखाई नहीं देती है तो आप अवसाद की अवस्था में चले जाते हैं। धूप का आपके घर या कार्यस्थल पर होना आवश्यक है। सुगंध भी हमारी इंद्रियों को ऊपर उठाने में मदद करती है। इसे मूड प्रेरक होने की दिशा में चिकित्सकीय रुप में भी देखा गया है। आप अपने आस–पास फूलों की खुशबू, अगरबत्ती की खुशबू, हर्बल तेल रखते हैं तो वह आपके मस्तिष्क की कोशिकाओं को सकारात्मकता की ओर ले जाती है।

9. हंसना: हंसी सबसे अच्छी दवा मानी जाती है जो स्वस्थ कोशिका पुनर्जनन को बढ़ाती है। जब मन तरोताजा होता है तो जीवन की आयु बढ़ती है। इसलिये एक अच्छी कॉमेडी फिल्म देखने या बच्चों के साथ, मित्रों के साथ हंसने से तनाव दूर हो जाता है। हंसी जीवन में आने वाली चिंताओं को मुस्कुराकर जीवन में बदलाव लाकर हमें सकारात्मकता से भर देती है।

10. विशिष्टताओं को अपनाएं: यदि आप अलग हैं, अर्थात आप समझते है कि आप अद्वितीय हैं तो इसे अपनाएं उससे मुंह न मोड़े। खुद को अपने गले लगाएं खुद को प्रोत्साहित करें और अपने अंदर जो भी प्रतिभा आप महसूस करते हैं उनको स्वीकारें तथा उसे विकसित करें।

सकारात्मकता आपको बहादुर बनने और अपने आप में खिलने के लिये प्रोत्साहित करती है। मेरा हमेशा से मानना है कि जीवन एक यात्रा है इसमें चुनौतियों को अवसर में बदलने की आवश्यकता होती है। ।

उजालों में मिल ही जायेगा कोई न कोई तलाश उसकी करो, जो अंधेरों में भी साथ दे।

# फौजी

**नवीन कुमार**
एम.टी.एस, कटक

भारत माता की शान की खातिर,
अपने तिरंगे की मान की खातिर,
सरहद पर जो खड़े हैं,
वे बहादुर फौजी हैं।

सियाचिन की ठंडी रात में,
राजस्थान की चिलचिलाती धूप में,
सरहद पर जो खड़े हैं,
वे बहादुर फौजी हैं।

देश में बाढ़ और सूखा आने पर,
लोगों की जान बचाने के लिये,
चट्टान की तरह खड़े रहने वाले,
वे बहादुर फौजी हैं।

अपने देश के अभिमान की खातिर,
अपने आवाम के जान की खातिर,
सरहद पर जो खड़े है,
वे बहादुर फौजी हैं।

वक्त आने पर घर में घुसकर मारने वाले,
वक्त आने पर दुश्मनों की हड्डियाँ तोड़ने वाले,
सरहद पर जो खडे हैं,
वे बहादुर फौजी हैं।

देश की खातिर प्राण न्यौछावर करने पर,
तिरंगे में लपेटे जाने वाले,
और शहीद कहलाने वाले,
वे बहादुर फौजी हैं।

दुनिया में वही देश सबसे ज्यादा मजबूत होता है जिसके नागरिक अपने देश से सबसे ज्यादा प्यार करते है।

# एक कदम परोपकार की ओर

**नन्दिनी दत्ता राय**
वरिष्ठ लेखापरीक्षक (केन्द्रीय कार्यालय)

आज मन बहुत अशान्त है, रह रह कर मन स्वयं से प्रश्न कर रहा है कि मैने जीवन में क्या किया। निःसन्देह यह प्रश्न प्रत्येक के समक्ष अवश्य आता होगा। जब वह समझ ही नहीं पाता कि वाकई जीवन में वह क्या कर रहा है।

मैं अपने को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ, ईश्वर ने मुझे हर सुख से सँवारा है। मैंने सम्भ्रान्त परिवार में जन्म लिया, अच्छी नौकरी प्राप्त की, अच्छे सम्भ्रान्त परिवार में मेरा विवाह हुआ एवं संसार का हर सुख मुझे प्राप्त हुआ।

आज पचपन (55) वर्ष की उम्र में जब पूरे परिवार के समक्ष स्वंय को पाती हूँ तो मन में विचार आता है कि मैंने अपने जीवन में क्या ऐसा विशेष किया जिसके लिये मुझे गर्व महसूस हो। तब मुझे ऐसा लगा कि जब ईश्वर का दिया मेरे पास सब कुछ है तो मुझे परोपकार के कार्य में स्वयं को समर्पित करना चाहिये।

वैसे मुझे किसी संस्थान के साथ स्वयं को जोड़ने की कोई इच्छा नहीं होती, कारण मुझे पूर्ण रुप से यह विश्वास नहीं होता कि जो मदद मेरी ओर से किसी संस्थान को जायेगी वह वास्तविक रुप से उन व्यक्तियों को पहुँचेगी जिनको उसकी विशेष आवश्यकता है। इसलिए मैं जिस व्यक्ति को मुझे लगता है मदद की आवश्यकता है, अपनी हैसियत मुताबिक मदद करने की कोशिश करती हूँ।

यहाँ बहुत से लोग बड़े–बड़े संस्थानों को दान देते हैं, अपना आयकर बचाते हैं, नाम भी कमाते हैं। परन्तु मेरा मानना है कि अगर हम किसी की सहायता कर रहे है तो उसमें अपना फायदा या नाम देखने की क्या आवश्यकता। हमारे शास्त्रों में भी लिखा है कि दायें हाथ से दान दो तो बायें हाथ को भी पता न चले। अपने आस–पास के लोगो को, जिनके पास पैसों की, अनाज की जरुरत हो, तो अपने सामर्थ्य के अनुसार उनकी मदद करें। मदद का हाथ किसी जरुरतमन्द व्यक्ति की ओर बढ़ाकर तो देखिये, बहुत अधिक खर्च नहीं होगा, परन्तु जो मानसिक सन्तुष्टि आपको ऐसा करके मिलेगी वह अनमोल है। किसी बच्चे को पुस्तकें, कापी, पेंसिल खरीद दें, किसी को अनाज या वस्त्र दान करें, अपने पास संजोने की जगह दूसरों में बांटे, मेरा दावा है आपको बहुत प्रसन्नता होगी, आत्म सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी।

मैं यह सोचती हूँ कि जीवन को सकारात्मक बनाने की मेरी यही चेष्टा है आप भी आजमाइये एक कदम परोपकार की ओर बढ़ाइये।

अगर व्यक्ति अपने द्वारा किये गये बुरे कर्मों को भविष्य में सतकर्मों द्वारा बदल देता है तो वह उसी प्रकार चमकने लगता है जैसा बादलों से निकला हुआ चाँद ।

# इंतजार बाकी है

**राजेश कुमार जांगिड**
व.ले.प. (जयपुर)

उदास जिन्दगी चली गई कही
हाथों में लगी मेहंदी का रंग,
क्या छूट गया है अब?
इधर गहरा है, अभी तक,
मेरी हथेली में उनका नाम,
उनकी हिना के गहराने का,
इंतजार सदियों का बाकी है

अब दिन उनका भी नहीं बनता,
दिन मेरा भी नहीं थमता,
उनके रुकने का मुकाम था मैं,
मुझे याद है उनके साथ का पल,
साथ उनके समय बिताने का,
इंतजार सदियों का बाकी है

दर्द दिल का, उन्हें भी था,
न जानें कौन सी खता हुई,
न जाने खता हुई ही नहीं
क्या खता दोनों ओर थी
उनके दिल से मेरा दिल लगाने का,
इंतजार सदियों का बाकी है

आने पर, तेरे आंसू पोंछ दूंगा
दर्द सुनूंगा, तेरा हमदर्द बनूंगा,
खता मानकर, अपनी–अपनी,
मैं तुझमें, तू मुझमें मिल जाएं,
बस साथ निभाने, दर तक आने,
इंतजार सदियों का बाकी है

देश के विभिन्न भागों के निवासियों के व्यवहार के लिए सर्वसुगम और व्यापक तथा एकता स्थापित करने के साधन के रूप में हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है।
सी पी रामास्वामी अय्यर

# बेरोजगारी अवसर या अभिशाप

**नवीन कुमार मोरल**
लिपिक

बेरोजगारी देश के सम्मुख एक प्रमुख समस्या है जो प्रगति के मार्ग को तेजी से अवरुद्ध करती है। यहां पर बेरोजगार युवक–युवतियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। स्वतंत्रता के 75 वर्षों बाद भी सभी को रोजगार देने के अपने लक्ष्य से हम मीलो दूर है। बेरोजगारी की बढ़ती समस्या निरंतर हमारी प्रगति, शान्ति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। यदि हम बेरोजगारी के कारणों का अवलोकन करे तो हम पाएँगे कि इसका सबसे बड़ा कारण देश की निरंतर बढती जनसंख्या है। हमारे संसाधनो की तुलना में जनसंख्या वृद्धि की गति कहीं अधिक है जिसके फलस्वरुप देश का संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

इसका दूसरा प्रमुख कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था है। वर्षो से हमारी शिक्षा पद्धति मे कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ। हमारी शिक्षा पद्धति का तरीका इतना पुराना हो चुका है कि इसमे प्रयोग को जगह नही मिल पाती, जिस वजह से हम रटी रटायी बाते ही सीख पाते है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी हमे नौकरी नही मिल पाती है।

बेरोजगारी का तीसरा प्रमुख कारण हमारे लघु उद्योगो का नष्ट होना अथवा उनकी महत्ता का कम होना है। इसके फलस्वरुप देश के लाखो लोग अपने पैतृक व्यवसाय से विमुख होकर रोजगार की तलाश मे इधर–उधर भटक रहे है। उज्जवल भविष्य की कामना रखने वाले अभिभावक इस उम्मीद से बच्चे को परीक्षा की तैयारी के लिए भेजते है कि यह हमे गरीबी के भंवर से निकालेगा, लेकिन घटते रोजगार अवसरों की वजह से यह संभव नही है। दिल्ली जैसे बडे व्यवसायिक शहरो में कई जगहों पर बच्चों को बडे–बडे सपने दिखाकर उनसे मोटी फीस वसूली जाती है, लेकिन इसके बावजूद जब उनका चयन कहीं नहीं हो पाता तो वे भावनात्मक रुप से टूट जाते है ऐसे में उनके अंदर हीन भावना व शक पैदा हो जाता है।

लेकिन अब प्रश्न उठता है कि क्या सभी को सरकारी नौकरी या प्राईवेट जॉब दिया जा सकता है जवाब नकारात्मक ही होगा। हम कैसे एक सरकार से इतनी सारी उम्मीद कर सकते है जोकि खुद इतनी सारी उधेड़ बुन में उलझी हुई है। इनसे उम्मीद रखना बेमानी होगा। प्रतियोगिता परीक्षाओं को सभी पास नही कर सकते और ये जो भेड़ चाल हम चल रहे है इसे बंद करना होगा। इन परीक्षाओं में आने वाले सवाल गणित, अंग्रेजी व कंप्यूटर के भी होते है जो सभी लोग हल नहीं कर सकते है। अब ऐसे में व्यक्ति विशेष इस उघेड़बुन में लग जाता है कि क्या मुझमे क्षमता नही, क्या मैं इसे पास नही कर सकता, क्या मै नाकारा हूँ, क्या मैने क्षमतानुसार मेहनत नही की? अब गहराई से सोचे तो इसका जवाब पाएंगे कि हम सभी को एक अलग विशेषता के साथ ईश्वर या परमपिता ने पैदा किया है। अब अगर प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करके कुछ प्राप्त नही हो रहा तो समझ जाओ कि आप दूसरे मकसद के साथ आये है हमे हीन भावना से ग्रसित नही होना है। ये बेरोजगारी आपकी दूसरे आयामों की तरफ मोड सकती है, जैसे खुद का व्यवसाय ,किराने की दुकान, मेडिकल स्टोर, हार्ड वेयर की दुकान इत्यादि जैसे सम्मलित कार्यो को अंजाम दिया जा सकता है।

कोई भी काम छोटा नही होता और धंधे से बड़ा कोई धर्म नही होता यह बॉलीवुड की किसी मशहूर फिल्म का

डायलॉग है। खुद का व्यवसाय मे तरक्की के इतने अवसर होते है कि इंसान सोच भी नही सकता, धीरुभाई अंबानी का ही उदारहण ले तो छोटे से पैट्रोल पंप से शुरुआत की और आज आपके सामने जीता जागता रिलायंस ग्रुप है। किराने की दुकान मे इंसान को इतने फायदे होते है कि वो अपने परिवार का पेट बड़े आराम से पाल सकता है और सुरक्षा भी है और शाम को परिवार के साथ समय व्यतीत भी कर सकता है। अगर बाजार की बदलती प्रवृति को देखे तो पाएंगे कि आने वाले समय मे किराने की दुकानो में सैकड़ो उत्पाद जुडने वाले है जिसकी आदत लोगो को लग जाएगी और फिर लोग उन्हें खरीदेंगे ही ,इतने आसार है इन क्षेत्रों में। ये सभ्यता जब तक रहेगी तब तक किरानों की दुकानों से सामान खरीदा जाता रहेगा।

अब मेडिकल स्टोर का ही उदाहरण लेते है तो ज्ञात होता है कि आने वाले समय मे लोग दवाईयो के सहारे ही जिऐगे बस एक या दो साल की मेहनत करके ही मेडिकल स्टोर का काम सीखा जा सकता है फिर चाहे तो खुद का स्टोर चालू कर सकते है किसी भी कंपनी से संपर्क साधकर हम घर बैठे दवाईया मंगा सकती है जो कि हमारे और हमारे परिवार दोनो के लिए अच्छा विकल्प है। जिस तरह लोगो की जीवनशैली, खानपान और रहन–सहन होता जा रहा है उससे यही बात सामने आती है कि बिना गोली लिए हम पानी भी नही पचा सकते कोई भी शारीरिक समस्या होते ही झट से एक गोली अंदर पट से हम अच्छा महसूस करने लगते है। इन सभी बातो के मद्देनजर यही दिखता है कि एक बेहतरीन करियर बनाया जा सकता है इस क्षेत्र में।

अब हार्ड वेयर के क्षेत्र का स्कोप देखे तो पाएगे कि आमदनी यहां भी कम नही है। इंसान जिस भी जगह रहता है वहां उसे रहने के लिए घर बनाना पड़ता है जिसके लिए ढांचागत संरचना हेतू सीमेंट, रेत , स्टील की जरुरत पड़ती है। ऐसे मे हार्डवेयर का धंधा बेमिसाल अवसरो वाला है अगर व्यक्ति एक छोटा सा कमरा भी बनाता है तो सैकड़ो क्विंटल रेत व सीमेंट की खपत हो जाती है जो हार्डवेयर की दुकान से ही खरीदा जाएगा, जाहिर है माल बिकेगा तो आमदनी भी होगी ही। आधुनिक समय में व्यक्ति महत्वकांक्षी होता जा रहा है और पड़ोसी से बड़ा आलीशान आशियाना बनाने की होड़ में लगा हुआ है जिससे इस क्षेत्र में तरक्की के बहुत अवसर है।

अंततः यही कह सकते है कि शुरुआत हम कहीं से भी कर सकते है, बशते की सीखने की इच्छा हममे होनी चाहिए। ईश्वर भी उनकी मदद करते है जो अपनी मदद करना जानते है। इसीलिए जरुरी नही बॉस के सामने दुम हिलायी जाए, हम अपने काम के खुद बॉस भी बन सकते है।

# शिक्षक

**नवीन कुमार**
एम. टी. एस

*सही गलत में जो अंतर बतलाते हैं,*
*जानवर और इंसान में जो अंतर बतलाते हैं*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

*हर जाति–धर्म से जो प्रेम करना सिखलाते हैं,*
*मानवता का जो हमें पाठ पढ़ाते हैं,*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

*जीवन में जो ज्ञान की रोशनी डालते हैं,*
*जीवन के महत्व को जो बतलाते हैं,*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

*शिखर पर चढ़नें का जो रास्ता बतलाते हैं,*
*अपने हक के लिये जो लड़ना सिखलाते हैं,*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

*दुनिया के हर रंग से जो हमें अवगत कराते हैं,*
*हमारे अंदर के अंहकार को जो हटाते हैं,*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

*स्कूलों में जो एक अच्छा इंसान बनाते हैं,*
*कच्ची मिट्टी से जो हमें पक्का घड़ा बनाते हैं,*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

*कभी माँ बनकर जो हमें समझाते हैं,*
*कभी पिता बनकर जो हमें डाँटते हैं,*
*कभी दोस्त बनकर जो हमें हिम्मत देते हैं,*
*वे 'शिक्षक' कहलाते हैं।*

**शिक्षक के उपकार "अमूल्य" हैं।**

शिक्षक के बैगर आप सभ्य और
समृद्ध समाज की कल्पना नहीं कर सकते।

# चुटकुले

**रमेश कुमार**
लेखापरीक्षक

**टीचर** – *बच्चों ड्राइवर और कंडक्टर में क्या फर्क होता है?*

**लटकू** – *गुरु जी, कंडक्टर सो गया तो किसी का टिकट नहीं कटेगा, लेकिन अगर ड्राइवर सो गया तो सबका टिकट कट जायेगा।*

**डाक्टर** – *आपका हेमोग्लोबिन कम है, शरीर में आयरन की कमी है, केल्शियम और विटामिन डी भी जरुरी मात्रा में नहीं है और*

**महिला मरीज** – *बस डाक्टर साहब, अब रहने दीजिये। इतनी कमी तो मेरी सास ने भी कभी नहीं निकाली।*

**गप्पू** – *अप्पू जल्दी उठ, भूकंप आ रहा है, पूरा घर हिल रहा हैं*

**अप्पू** – *चुपचाप जाकर सो जा घर गिरेगा तो हमारा क्या जायेगा, हम तो किरायेदार हैं।*

**पति** – *इस महीने मैं तुम्हें और एक पैसा भी नहीं दूंगा*

**पत्नी** – *आप बस मुझे 500 रुपये उधार दे दीजिए, मैं आपकी तनख्वाह मिलने पर आपको वापस कर दूंगी।*

**पत्नी पति से** – *दो किलो मटर ले लूँ?*

**पति पत्नी से** – *हाँ, ले लो*

**पत्नी पति से** – *पूछ नहीं रही हूँ छील लोगे इतने या कम लूँ?*

**ट्रेन में दो यात्री**

**पहला** – *व्हाट्सअप इंसान को हमेशा आगे बढ़ाता है।*

**दूसरा** – *वो कैसे ?*

**पहला** – *अब मुझे ही देखिए, दो स्टेशन पीछे उतरना था।*

**गप्पू को रास्ते में साथ पढ़ने वाली लड़की दिखी।**

**गप्पू** – *तुम्हें याद है, हम साथ में पढ़ते थे*

**लड़की** – *पढ़ती तो में थी, तू तो मुर्गा बनता था।*

**पिता** – *बेटे, मैं तेरी खातिर नये जूते लाया हूँ*

**बेटा** – *धन्यवाद पापा, पर ये तो बडे साइज के हैं।*

**पिता** – *अरे बेटा पहनूंगा तो मैं, तुझे तो सिर्फ खाने है।*

# श्रेष्ठता की वास्तविक अवधारणा

**सुरेश कुमार हेला**
वरिष्ठ लेखापरीक्षक (कोलकाता)

दुनिया में कोई भी इंसान अपने जन्म से श्रेष्ठ नहीं होता है। बल्कि अपने द्वारा किये गए कुछ अच्छे कर्म ही उसे दूसरों से श्रेष्ठ बनाते हैं, इसके लिये उसे काफी संघर्ष करना पड़ता है जैसेः– किसी व्यक्ति को सही मार्ग दिखाना जिस पर चलकर उसे किसी प्रकार की परेशानियों का सामना न करना पड़े तथा वह अपनी मंजिल की ओर अग्रसर होने के काबिल बन सके। फिर चाहे उसके अपने घर–परिवार का सदस्य या मित्र हो या अपने कार्यालय में कार्यरत सहकर्मी हो जिनमें आपसे कुछ नये कार्य सीखने का उत्साह हो, सदैव उनकी सहायता करनी चाहिए जिससे वह कोई भी कार्य करने में निपुण हो सके। सिर्फ अपनी वरिष्ठता का ही रौब दिखाने के लिये अपने किसी कनिष्ठ की त्रुटियां ही निकालने में और उन्हें फटकारने में अपने महत्वपूर्ण समय नष्ट करते रहें, इससे कोई भी कार्य एक निर्धारित समय पर होने के बजाय और विलम्ब से होता है क्योंकि दुनिया में प्रत्येक मनुष्य की सोचने समझने की शक्ति और बुद्धि एक जैसी नही होती है। कोई किसी बात को बहुत जल्द समझ जाता है तो किसी को समझने में थोड़ा समय लग जाता है। अगर ऐसी स्थिति में उन्हें समझाने के वजाए उन पर भड़क उठे तो तनाव में उनसे बनने लायक कार्य भी अक्सर बिगड़ जाया करते है।

मेरी यह रचना ऐसे ही प्रयत्नशील व्यक्ति को समर्पित है जिसके कठोर परिश्रम और सच्ची लगन से ही आज पूरी दुनिया में अपने देश का नाम गौरवान्वित है।

यह उन दिनों की बात है जब किसी शहर में रामदीनजी नामक एक सज्जन रहते थे। वह इतने सरल स्वभाव के इंसान थे कि उनसे किसी का कष्ट देखा नहीं जाता था। किसी को भी परेशानी में देख वह फौरन उसके करीब जाते और उनसे जो भी बन पाता वह मदद करते थे, वह ईश्वर को सदैव धन्यवाद देते और कहते कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूं मुझे ईश्वर ने ऐसे नेक कार्य हेतु इस दुनिया में भेजा है जिससे मैं किसी के कुछ काम आ सकता हूँ। इस प्रकार एक दिन रामदीनजी को उनके वरिष्ठ अधिकारी महोदय ने दफ्तर में कुछ महत्वपूर्ण कार्य सौंप दिए और उन्हें एक निर्धारित अवधिनुसार उस कार्य को करने का आदेश दिया। रामदीनजी बड़े ही उत्साहपूर्वक कार्य को ग्रहण कर अपनी योग्यतानुसार उस कार्य को पूरा करने में जुट गए एवं दी गई अवधिनुसार कार्य सम्पन्न कर दिया तथा अपने वरिष्ठ अधिकारी के समक्ष कार्य प्रस्तुत कर दिया। परंतु शायद रामदीनजी के अल्प शिक्षानुभव के कारणवश उस कार्य में कुछ त्रुटियां रह गई। बस फिर क्या था, उनके वरिष्ठ अधिकारी महोदय ने फौरन रामदीनजी को अपने कक्ष में बुलाया और फटकारने लगे, जिससे उनके मनोबल को काफी ठेस पहुंची ।

उनका सारा उत्साह चूर–चूर हो गया। अब उनमें किसी भी कार्य को बेझिझक करने की हिम्मत नहीं होती थी। वह हमेशा डरते ही रहते थे कि कहीं इस कार्य को करने में फिर से कोई त्रुटि हो गई तो वरिष्ठ अधिकारी महोदय से दोबारा डांट सुनने को मिलेंगी। परंतु सभी की भांति दफ्तर के कार्य उन्हें भी करने ही पड़ते थे। कार्य में त्रुटियों के भय से वह सदैव भयभीत रहते थे। इसके कारण उनसे अक्सर कुछ न कुछ भूल–त्रुटियां हो ही जाती थी, जिसके कारण उन्हें डांट सुनने को मिलती थी।

धीरे–धीरे रामदीनजी को अपने कार्य के प्रति उत्साह में कमी होने लगी। इस प्रकार दिन गुजरते गए। एक दिन प्रधान कार्यालय द्वारा दफ्तर में निरीक्षण हेतु कुछ वरिष्ठ निरीक्षक अधिकारी महोदय पधारे और बारी–बारी से सभी कर्मचारियों की फाइलों की जांच करने लगे। जांच करने के दौरान निरीक्षक अधिकारियों द्वारा देखा गया कि दफ्तर में कार्यरत कुछ ही कर्मचारियों की फाइलें सम्पूर्ण विधिपूर्वक और कार्यालय आदेशानुसार सम्पन्न हुई है। इतना ही नहीं, रामदीनजी की कार्यशैली से भी वरिष्ठ निरीक्षक अधिकारी महोदय बहुत प्रसन्न हुए। अपने निरीक्षण कार्य समाप्त कर अधिकारी महोदय वापस अपने प्रधान कार्यालय चले गए। कुछ दिनोंपरांत प्रधान कार्यालय द्वारा प्रेषित किया गया एक पत्र आया जिसमें कुछ कर्मचारियों की पदोन्नति हेतु आदेश दिए गए थे। उन कर्मचारियों में रामदीनजी का नाम भी शामिल था। अपनी इस पदोन्नति से प्रोत्साहित हो रामदीनजी ने फिर से पहले की भांति निर्भय होकर दफ्तर के कार्य में अपनी महत्वपूर्ण योगदान प्रारम्भ कर दिया।

किसी ने सच ही कहा है कि कठिन परिश्रम करने वालों की कभी हार नहीं होती, देर से ही सही, परंतु एक न एक दिन इसका फल उन्हें जरुर मिलता है।

समय और स्थिति कभी भी बदल सकती है, अतः
कभी किसी का अपमान न करें और न ही किसी को तुच्छ समझे।

# आज का युवा

**गीता मेहता**
हिंदी अधिकारी (केन्द्रीय कार्यालय)

भूल जाते हैं बचपन का वह प्यार–दुलार,
मार देते है ठोकर बड़े होते ही,
भूल जाते हैं मां–बाप की उन कुर्बानियों को,
जो ख्वाहिशें पूरी करने में सब कुछ दॉव पर लगा देते हैं।
सत्य है समय के साथ सब पुराना हो जाता है।
भूल जाते हैं माँ बाप ही पहले गुरु है
समय के साथ स्वयं को गुरु मान लेते हैं
अर्थात् उपदेश सुनने के बजाय उपदेश देना शुरु कर देते हैं।
भूल जाते है माँ–बाप माँ–बाप ही होते हैं
भले ही कितना पीढ़ीगत अंतराल हो तथा सोच व हालातों में अंतर हो,
कैसी भी परिस्थिति चाहें जो भी हो माँ बाप तिरस्कार के योग्य नहीं होते
भूल जाते है कि पुरानी सोच में भी अनुभव का अंश होता है जोकि नये युग में भी कारगर होता है।
माँ–बाप बच्चों में अपना प्रतिबिम्ब देखते है लेकिन बच्चें तुच्छ व अनुपयोगी वस्तु का आइना दिखाते है।
भूल जाते हैं उनका अपनत्व और दुलार
और मान लेते है एक बोझिल रिश्ता
भूल जाते हैं पुराने रिश्ते–नातों की पहचान और बह जाते है आधुनिकता की हवा में।
भूल जाते हैं उस कहावत को जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
भूल जाते हैं कि वे भी एक दिन वृद्धावस्था में प्रवेश करेगे।
भूल जाते हैं अपनी संस्कृति की पहचान
नहीं रहता याद क्या थे क्या हो गये हम।

# समभाव

**पंकज मोहन जायसवाल**
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

*मुझे उर्दु भी प्यारी है और हिंदी से भी मोहब्बत है,*
*मुझे रंग लाल भी जंचता है और हरा भी मुझको फबता है*

*करुं मस्जिद में मैं पूजा, नमाज मंदिर में पढ़ता हूं,*
*मैं धर्म और जाति में नहीं, यकीन इंसान में करता हूँ*

*न कोई है यहाँ हिंदू न कोई मुसलमान है,*
*सभी भगवान के बंदे हैं और अल्लाह सब का है*

*दिवाली भी मनाता हूँ और होली भी मनाता हूँ,*
*मैं मौका–ए–ईद पर भी गले सबको लगाता हूँ*

*ये सारी सरहदें और भेद तो इंसान करता है,*
*ऊपर वाला तो बस हमारे कर्मों को परखता है*

*सभी का खून है जब लाल और सबको ही मरना है,*
*फिर जाति धर्म के नाम पर क्यों लड़ना झगड़ना है"*

# शहीद

**भाव्या सक्सेना**
सुपुत्री श्री मुकेश कुमार सक्सेना
स.ले.प. अधिकारी

*जब एक जवान शहीद हो जाता है तो पूरा वतन गमगीन हो जाता है।*
*सूना हो जाता है माँ का आँचल, बेटे का था वादा माँ आऊँगा कल।*
*ताकते रहते हैं पिता उस देहरी पर, जहाँ गया था वह उन्हे आखिरी बार छोड़कर।*
*उठ जाता है बच्चों के सिर से पिता का हाथ, फिर खेलेंगे घोड़ा–घोड़ा किसके साथ।*
*टूट जाता है पत्नी का मंगलसूत्र, कैसे भर ले वह अपनी माँग में सिंदूर।*
*नहीं बांध पाती है बहना किसी को राखी, भाई को याद कर उसे रोना आता है काफी।*
*क्या कोई ऐसे भी वादा निभाता है, कि तिरंगे में लिपट कर घर आता है।*
*पर यह बलिदान व्यर्थ नहीं जाता है, देश प्रेम का जज्बा और बढ़ जाता है।*
*जब एक जवान शहीद हो जाता है, तो पूरा वतन गमगीन हो जाता है।*

# नारी सृजन का आधार

**सीमा कुमारी**
क. अनुवादक (अहमदाबाद)

*यदि नारी न होती तो न होता संसार,*
*नारी ही है हर सृजन का आधार।*
*चाहे वो सृजन जीवन का हो या*
*सृजित हो समाज,*
*हर राष्ट्र के निर्माण में*
*नारी का है अथक योगदान।*

*कभी माँ बनकर बच्चों को संस्कार दिया तो*
*कभी बन शिक्षक दिया समाज को ज्ञान ,*
*कभी कवयित्री बन राष्ट्र को दिया रसगान तो*
*कभी लिख कथाएँ दिया विकास का संज्ञान,*
*कभी कर वकालत किसी को न्याय दिलाया तो*
*कभी समाज सेविका बन किया समाज का कल्याण।*

*नारी तो है प्रेम की मूर्ति,*

*प्रेम से विकसित होता संसार।*

*नारी तुम्हे नमन है,*

*धैर्य, साहस, प्रतिभा के बल पर*

*तुमने किया है राष्ट्र का नवनिर्माण।*

# सुबह की सैर (व्यंग्य)

**प्रदीप कुमार चौधरी**
स.ले.प.अ (जयपुर)

सुबह देर तक बिस्तर में पड़े रहते हो। घूमने जाना कब शुरु करोगे। पेट तो देखो कहां जा रहा है और कमर तो अब कमरा ही हो चुकी है श्रीमती जी की आवाज कानों में पड़ रही थी। आखिर कोई कब तक ये उलाहने सुन सकता है। सुबह की नींद का आनंद ही कुछ और है। पर हे ईश्वर मैं कहता हूँ कि जब आप इस दुनिया में हमें लाये हो तो यह स्वास्थ्य और सुबह जल्दी उठकर घूमने जाने का लोचा क्यूं। जितनी उम्र देनी है दे दो। जब दुनिया से उठाना हो, उठा लो हमें शिकायत नहीं होगी पर यह सुबह उठने का फण्डा ठीक नहीं लगता। सुबह सुबह की सुखद नींद की कुर्बानी हमें उचित प्रतीत नहीं होती। तभी अंदर से आवाज आई कि, ईश्वर और अर्द्धांगनी से बहस कभी सही नहीं होती। हमने भी तय कर लिया कि, बहुत हुआ अब और नहीं सुनेंगे। आखिर हमारा भी कोई स्वाभिमान है कि नहीं। कल से ही प्रातः सैर का शुभारम्भ करेंगे।

अगले दिन सुबह से कूलर की ठंड़ी हवा हमारी प्रतिज्ञा पर भारी पड़ती दिख रही थी। एक बार तो लगा कि कल जो बड़े बड़े वायदे खुद से किये थे वे सभी कहीं ध्वस्त न हो जायें। एक आंख खोलकर घड़ी की तरफ देखा सुबह के साढे पांच बजे थे। मन को मजबूत कर ऊँघते हुए उठे,मंजन किया, नित्य कर्म से निवृत्त हुए, पर चाय पिये बिना सैर कैसी। चाय बनाकर पी, घड़ी में 6 बजे थे। आखिर सैर पर रवाना हो गए। बाहर जो ठंडी बयार बह रही थी वह हमारी चुस्ती पर भारी पड़ रही थी। अभी जज साहब के मकान तक पहुंचे ही थे कि करीब से किसी के गुर्राने की आवाज सुनाई दी। देखा तो जज साहब के चौकीदार का कुत्ता था जो हमें देखकर अप्रसन्न हुआ जान पड़ता था। शायद उसकी नींद में हमने खलल डाल दिया था। कुछ समझ पाते तब तक टीमवर्क का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उसका साथी कुत्ता भी उसके सपोर्ट में आ चुका था। आत्म सुरक्षा हेतु पत्थर उठाने के लिये झुके तो एक कंकर तक नहीं मिला। परिस्थितियां गंभीर होती जा रही थी। कुत्तों ने हमें पत्थर उठाने के लिये झुकते हुए देख लिया था। अब तो भागने की गलती भी नहीं की जा सकती थी। नींद उड़ चुकी थी। बात और बिगड़ जाती इससे पहले ही एक दूधवाला मोटरसाइकिल पर हमारे और कुत्तों के बीच से गुजरा। कुत्तों का ध्यान उसकी तरफ हो गया और वे भौंकते हुए उसके पीछे लग लिए। हमें खिसकने का मौका मिल गया था। जान की खैर मनाते हुए उल्टे पैर घर की तरफ लौट गये। पर हम बता दें कि हमने हिम्मत नहीं हारी है, पर रास्ता नया चुन लिया है।

कार्यालय में आयोजित रक्त दान शिविर में रक्तदान करते अधिकारी एवं कर्मचारी

हिंदी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह में दीप प्रज्जवलित करते हुए अधिकारीगण

## कार्यालय द्वारा आयोजित नॉर्थ जोन क्रिकेट टूर्नामेंट की कुछ झलकियां

नव वर्ष २०२३ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए
प्रधान निदेशक महोदया एवं अन्य ग्रुप अधिकारी

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)

दिल्ली-110054